ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 141-143
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

विज्ञान : तकनीकी उच्च विक्षण माध्यम और भारतीय भाषाएँ

डॉ0 अतुल गुर्टू

असिस्टेंट प्रोफेसर– के० पी० ट्रेनिंग कॉलेज, प्रयागराज (उ0प्र0), भारत

Received-06.07.2022, Revised-11.07.2022, Accepted-14.07.2022 E-mail:atulgurtukptc@rediffmail.com

सारांश: *– प्राकृतिक शिक्षा (मानवीय) प्रणाली के मुख्य चार चरण होते हैं जो क्रमशः हैं, अनुभवों को भाषा (मातृ) में ठीक – ठीक गहराई से वर्णन ; वर्णित ज्ञान का दीर्घ काल तक स्मरण (लेखन प्रक्रिया) : ज्ञान का मानवीय मस्तिष्क द्वारा उचित विश्लेषण : संश्लेषण द्वारा नए – नए शोध अविष्कार । सामर्थ बढ़ाने हेतु ही मानव ने पेपर, कंप्यूटर, इंटरनेट आदि का निर्माण किया परंतु मूल में तो प्राकृतिक मानवीय बुद्धि ही है, जो मातृभाषा में ही उत्कृष्ट परिणाम दे सकती है। ब्रिटिश पराधीनता काल में यह धारणा बना दी गई, भारतीय भाषाएं आधुनिक विज्ञान तकनीकी शिक्षण के लिए सक्षम नहीं है पर इससे अधिकांश मौलिक प्रतिमाएं कुंठित हो गई।*

कुंजीभूत शब्द– *प्राकृतिक शिक्षा, मानवीय प्रणाली, दीर्घ काल, स्मरण, लेखन प्रक्रिया, मस्तिष्क, विश्लेषण, संश्लेषण।*

मौलिक शोध नवाचार की विविधता और गुणवत्ता पर भी इसका प्रभाव पड़ा। भारतीय प्रतिभाओं का एक बहुत छोटा वर्ग ही आगे बढ़ सका द्य मातृभाषा में शिक्षित भारतीय ही अपनी बौद्धिक क्षमता का 100 प्रतिशत विकास कर नए–नए मौलिक नवाचार कर पाएंगे, जिससे भारत विश्व में पुनः जगद्गुरु बन सकने में समर्थ होगा । वर्तमान के स्टार्टअप कार्यक्रम इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। पुरानी नींव, नया निर्माण के मूल मंत्र के आधार पर पुरानी सांस्कृतिक सोच मातृभाषा द्वारा शिक्षित होने पर भारतीय मूल नए–नए शोधों में अपना शत– प्रतिशत दे सकेंगे। चुनौतियां तो आएंगी ही पर भारतीय सोच का पूर्ण उपयोग होगा और चुनौतियों का निराकरण भी। वर्तमान पत्र में इन्हीं चुनौतियों का सही–सही विश्लेषण और उनका उचित निराकरण करने के उपायों पर चर्चा की गई है।

ज्ञान को भारतीय संस्कृति में वेद कहा गया है। विषय वस्तु भेद से इसे ४ वेदों में बांटा गया। इन्हें ठीक ठीक समझने के लिए ६ वेदांगो की रचना की गयी जिनमे एक का नाम है शिक्षा जिसको पाश्चात्य जगत में एजुकेशन कहा जाता है। अपने विचारों अनुभवों को व्यक्त करने के लिए विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न भाषाओ की उत्पत्ति हुयी जिनमे माताओ ने अपने बालकों को सर्व प्रथम शिक्षा दी। अतः उसे मातृ भाषा कहा गया और यह भाषा ही उस विशेष मानव समाज की भाषा बनी जिसमे उसकी बुद्धि का विशेष उत्थान संभव हुआ। स्पष्ट है शिक्षण हेतु मातृ भाषा ही सर्व श्रेष्ठ होनी चाहिए।

समस्या तब उत्पन्न हुयी, जब मानव समूह भ्रमण करते हुए दुसरे समूहों से टकराने लगे । युद्ध कौशल में अधिक निपुण ग्रुपों ने दुसरे ग्रुपों पर अधिकार जमा कर अपनी विचारधारा थोपनी प्रारम्भ कर दी। पराजित ग्रुपों को जीवन यापन हेतु मजबूरी में इसे स्वीकार करना पड़ा। उदाहरणार्थ १४ वी सदी में कश्मीर की स्थानीय जनता के एक हिस्से ने सरकारी नौकरीयां पाने की लालच में उर्दू– फ़ारसी पढ़ी और आर्थिक रूप से अपेक्षाकृत अधिक संपन्न हो गए।

मुग़ल शासन में यह प्रवित्ति और बढ़ी। ऊंच नीच अमीरी गरीबी से भेद बढ़ाने लगा। विक्टोरिया शासन काल में अधिकांश देशो में ब्रिटिश शासन हो जाने से अंग्रेजी भाषा का ज़बरदस्त प्रभाव बढ़ा । इस प्रकार अंग्रेजी का अंतर्राष्ट्रीयकरण होने लगा। यह संयोग ही है की इसी काल में पश्चिम में साइंस और टेक्नोलॉजी का विकास होने लगा था और भारत अंग्रेज़ों के आधीन था। यह प्रचार ज़ोरों से किया जाने लगा की अंग्रेजी के बिना साइंस और टेक्नोलॉजी का विकास संभव ही नहीं है। यद्यपि जर्मनी, फ्रांस, रूस, चीन, जापान आदि स्वतंत्र देशो ने अपनी अपनी भाषाओं में साइंस और टेक्नोलॉजी का विकास किया, पढ़ी और पढ़ाई। राजनैतिक पराधीनता के कारण हमे पहले उर्दू– फ़ारसी और फिर अंग्रेजी पढ़नी पढ़ी । बाद में इन्ही ग्रुपों ने शेष भारतीयों पर अपना प्रभुत्व हमेशा जमाये रखने हेतु अंग्रेजी के अंतर राष्ट्रीय भाषा होने का भौकाल बड़े प्रभावी ढंग ढंग से बनाया और प्रचारित किया।

एक अंतर्राष्ट्रीय षड्यंत्र के तहत ये ज़बरदस्त तरीके से भारतीयों के दिलों दिमाग में यह बैठाया गया की साइंस टेक्नोलॉजी की पढ़ाई अंतर्राष्ट्रीय भाषा अंग्रेजी में ही संभव है, जिससे भारतीय मष्तिष्क को कुंठित कर स्वतंत्र चिंतन से रोका जा सके और अपनी पुरातन ज्ञान विज्ञान की परंपरा से दूर किया जा सके। क्या राजनैतिक रूप से पराजित होने से पहले भारतीय विज्ञान टेक्नोलॉजी शून्य थी ? क्या मिसाइल मैन के नाम से मशहूर भारत के प्रेजिडेंट कलाम साहब ने रामायण कालीन युद्ध से मिसाइल बनाने की प्रेरणा नहीं ली थी ? आज भारत स्वतंत्र है और पुनः विश्व की ५ वी आर्थिक शक्ति बन चुका है। हर क्षेत्र में स्वदेशीकरण हो रहा है । भारतीय भाषाओं में शिक्षण होने से भारतीयों की प्रतिभा का नैसर्गिक उत्तरोत्तर विकास होगा। मानवीय संवेदनाओ का विकास प्रगटीकरण मातृ भाषा में अधिक प्रभावी हो सकता है। दूसरी भाषा में तो रटंत

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

ही होता है मौलिक चिंतन नहीं।

अंग्रेजी के पक्ष में एक अकेला ज़बरदस्त यही तर्क हर जगह सुनने को मिलता है की यह अंतरराष्ट्रीय भाषा है। विदेश में क्या करोगे ? यदि यह सत्य है, तो संयुक्त राष्ट्र संघ में एक अंग्रेजी ही होनी चाहिए थी पर वहां तो जर्मन, फ्रेंच, रूसी और चीनी भाषाएँ भी है जिनका स्वतः ही आपस में अनुवाद की व्यवस्था है। क्या इन देशो की शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी है? नहीं ना। अब तो हिंदी को भी इन्ही भाषाओं में ६ वी भाषा के तौर पर मान्यता मिल गयी है। वास्तविकता यह है की हम अधिकतर अंग्रेजी भाषी देशो में ही जाते है, जैसे – अमरीका ऽ इंग्लैण्ड, कनाडा, आस्ट्रेलिया आदि। शेष देशो में जाने से पहले उनकी भाषा ही पढ़नी पड़ती है, शिक्षण हेतु। तभी वहां प्रवेश संभव होता है। हमारी समस्या ये है की हमारा राजनैतिक, सामाजिक, बौद्धिक नेतृत्व मानसिक रूप से अंग्रेज़ियत का गुलाम हो गया है। वस्तुतः अब हम काले अंग्रेज़ो की तरह बर्ताव करने लगे है। जिन्हें अंग्रेजी भाषा का ज्ञान नहीं है उन्हें हम पढ़ा लिखा ही नहीं मानते भले ही वह अपने विषय का परम विद्वान् हो। अपनी पुरातन संस्कृति विज्ञान पर गर्व करना तो दूर उसे जानना भी ज़रूरी नहीं समझते वरन उसका उपहास उड़ाने में आनंद लेते है। पर अब राजनैतिक, सामाजिक, बौद्धिक परिवेश बदल रहा है। शुद्ध स्वदेशी भारतीयता पर गर्व करनेवाला नेतृत्व है। ज़रुरत है केवल एक बड़े दृढ राष्ट्रीय सामूहिक संकल्प के साथ प्रबल इच्छा शक्ति की। तैरना तैरने से ही आएगा। भारतीय भाषाओं में शिक्षण भी शिक्षण करने से ही आएगा। प्रारम्भ करने की प्रक्रिया तो करे। चुनौतियां आएंगी, आनी भी चाहिए, बिना चुनौतियों के जीत का मज़ा भी कहाँ आता है? कुछ प्रमुख चुनौतियां इस प्रकार की हो सकती है –

1– पारिभाषिक शब्दावली का अभाव।
2– योग्य शिक्षकों का अभाव।
3– बहुभाषी देश होना।
4– अंतर प्रांतीय ट्रांसफर।
5– दूसरे प्रान्त की भाषा का न आना।
6– अंतर प्रांतीय सामंजस्य।
7– भाषा विशेष का अहंकार।
8– अंग्रेज़ियत का मोह आदि।

मानवीय शिक्षण प्रक्रिया के ४ चरण इस प्रकार है –

1– शिशु अवस्था में मानवीय संवेदनाओ का प्रयुक्त भाषा ध्वनि से एकाकार करना।
2– दीर्घ काल तक स्मरण रखना, सहायता हेतु लिखना, कम्प्यूटर आदि।
3– प्राप्त ज्ञान का विश्लेषण, मातृ भाषा में करना अधिक प्रभावी होगा।
4– विश्लेषित ज्ञान को संश्लेषित करके नए नए अविष्कार करना, यह भी मातृ भाषा में ही विचार करने से नैसर्गिक मानसिक रूप में सर्वाधिक प्रभावशाली होगा।

एक बार दृढ संकल्प से प्रयास होगा, तो संस्कृत के नेतृत्व में उत्तर भारतीय भाषाओ में तथा तमिल के नेतृत्व में नए परिभाषित शब्दों का बनाना सरल होगा। अपने व्याकरण में ढाल कर दूसरी भारतीय भाषाओ से भी शब्द लिए जा सकते है, अंग्रेजी से भी आदान प्रदान संभव है, जैसे हॉस्पिटल का अस्पताल, रेल वे ट्रेन का रेलगाड़ी आदि। विरोध अंग्रेजी माद्धयम यानि अंग्रेज़ियत से है अंग्रेजी भाषा से नहीं। भारतीय वैज्ञानिक होमी जहाँगीर भाभा सहित अनेको वैज्ञानिको का स्पष्ट मत है की देवनागरी लिपि में लिखित संस्कृत कम्प्यूटर प्रयोग के लिए सबसे अधिक उपयोगी सिद्ध हो सकती है, क्यूकी जैसा लिखो वैसा ही पढ़ो एकबार दृढ संकल्प से प्रयास होता दिखेगा तो शिक्षक मनोयोग से समर्पित हो जायेगे। बहुभाषी देश होना दुर्भाग्य नहीं सौभाग्य हो जायेगा परस्पर परस्पर स्पर्धा से। नयी नयी भाषा सीखने के अवसर मिलेंगे। वर्तमान में किसी भी भाषा का काम चलाऊ ज्ञान एक महीने मे सीखने की अनेको विधियां उपलब्ध है एक दुसरे के प्रांतों में जाकर उनकी भाषा में बात करने से राष्ट्रीय सौहार्द भी बढ़ेगा तथा उसकी ही भाषा श्रेष्ठ है, यह मिथ्याभिमान भी दूर होगा अंग्रेज़ियत छूटेगी पर अंग्रेजी भाषा का ज्ञान होगा । मेरा यह निश्चित मत है भारतीय भाषाओ का विरोध उन कुछ स्वार्थी तथाकथित अंग्रेजियत मानसिकता वाले ग्रुप का है जो अपना वर्चस्व हर हाल में बनाये रखना चाहते है। उन्हें डर है की भारतीय भाषाओ में शिक्षण होने से उनका नौकरियों में एकाधिकार टूट जायेगा द्य क्यूकी तब भारत की १३५ करोड़ जन समूह शिक्षित हो प्रतिस्पर्धा करेगा । तनिक विचारे की क्या प्राचीन काल के शारदा पीठ (कश्मीर), नालंदा (बिहार) और तक्षशिला (अब पाकिस्तान में) शिक्षा अंग्रेजी में होती थी, जहाँ विश्व भर से विद्यार्थी आते थे ? क्या दक्षिण भारतीय अंग्रेज़ी पढ़ कर सागर पार जावा, सुमात्रा, चीन, जापान, कोरिया आदि देशो में व्यापार आदि करने जाते थे ?

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. https://economictimes.gov.in/ indiatimes | com / industry / services / education / how india - is - shifting - towards - an - inclusive - learning - in - science - and tech / articleshow / 64691579 | cms? utm_source = contentofinterest & utm_me dium = text & utm_campaign = cppst.
2. https://economictimes.gov.in/ indiatimes | com / industry / services / education / how india - is - shifting - towards - an - inclusive - learning - in - science - and tech / articleshow / 64691579 | cms? from = mdr.
3. https://www. oxford reference | com › page › science.
4. https : // www | India | gov | in / topics / science technology.
5. https : // www | jstor | org/stable/23527140.

*****